Hume theory of Causation

Q:- ह्यूम के कारण-कार्य भाव या कारणतावाद की व्याख्या करें।

Ans:- ह्यूम के मतानुसार कारण की आधुनिक धारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित होने के कारण 'कारण' को सिर्फ कारण के अर्थ में लेती है, हेतु के अर्थ में नहीं। ह्यूम के अनुसार समय की दृष्टि से पहले आने वाली घटना जिससे कोई अन्य घटना उत्पन्न मानी जाती है, उस घटना का कारण कहलाती है। भविष्य में जब भी वह पूर्ववर्ती घटना उत्पन्न होगी तो उससे उसके बाद जो घटना आती है वह भी उत्पन्न होगी। कारणता की इस धारणा में तीन बातें महत्वपूर्ण है:—
(i) कारण पूर्ववर्ती होता है। (ii) कारण से कार्य उत्पन्न होता है। (iii) कारण की उपस्थिति से कार्य जरूर उत्पन्न होता है।

कारण संबंधी उपर्युक्त तीसरी बात को कारण-कार्य नियम (Law of causation) की संज्ञा दी गई है। तथा सारे वैज्ञानिक सामान्यीकरणों को इसी पर आधारित माना जाता है। इस नियम के अनुसार समान कारण से बराबर समान कार्य ही पैदा होता है। उदाहरणार्थ:- घर्षण से यदि आज गर्मी पैदा होती है, तो बराबर ही घर्षण से गर्मी पैदा होगी। ठीक उसी प्रकार आज यदि पानी से प्यास बुझती है तो आगे भी पानी से ही प्यास बुझेगी। यानि जिस कारण से जो कार्य आज पैदा होती है उस कारण से वही कार्य भविष्य में भी पैदा होगी। अतः कारण-कार्य के इसी नियम पर सारे वैज्ञानिक नियम, जिनकी सार्वभौमिकता और निश्चितता पर हम विश्वास करते है इसी नियम पर आधारित होती हैं। कारण तथा कार्य के बीच एक अनिवार्य संबंध होता है, क्योंकि कारण उसे ही कहा जाता है जिसकी उपस्थिति में कार्य अनिवार्य रूप से उत्पन्न होता है।

ह्यूम महोदय कारण-कार्य संबंधी इस अनिवार्यता की तीव्र आलोचना करते हुए कहते है कि- कारण तथा कार्य के बीच अनिवार्य संबंध नहीं होता है। पानी है और उसमें प्यास बुझाने की शक्ति नहीं है, इसमें आत्म विरोध कहाँ है? इसी प्रकार घर्षण है परन्तु गति पैदा नहीं होती, आरसेनिक है परन्तु मृत्यु नहीं होती इसमें आत्मविरोध कहाँ है? परन्तु वास्तविकता में आजतक ऐसा नहीं पाया गया है कि पानी हो और प्यास बुझाने की शक्ति नहीं हो, आरसेनिक हो और उसमें मृत्यु पैदा करने की शक्ति नहीं हो, इससे यह सिद्ध होता है कि भविष्य में भी अनिवार्य रूप से ऐसा होता रहेगा, और हम इसके विरोधी उदाहरणों

Scanned with CamScanner